सृजन की सार्थकता

डॉ. बहादुर सिंह परमार

प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपादानों की व्याख्या जिस रूप में कलात्मक रूपों में परिवर्तित करना सृजन का आधार है। सृजन की सार्थकता इसमें है कि उसकी जितनी लोगों को प्रभावित कर उनकी उपयोगिता को बढ़ाता है। साहित्य भी कला का एक अंग है। साहित्य समाज से प्रभावित होता है और समाज को भी प्रभावित करता है। समय-समय पर कला के उद्देश्य परिवर्तित होते रहे हैं लेकिन मानव हित केन्द्र में रहा है। सृजन की सार्थकता को आधार बनाकर लिखा गया आलेख इस पुस्तक का प्रथम पृष्ठ है। इसके अतिरिक्त लगभग तेईस आलेखों को एक पुस्तकाकार में आपकी सेवा में है। इन आलेखों में साहित्य के विविध विषयों को स्पर्श करने का प्रयास है।

सृजन की सार्थकता

डॉ. बहादुर सिंह परमार

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
दिल्ली-110053

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

सृजन की सार्थकता

डॉ. बहादुर सिंह परमार

© प्रकाशक

प्रथम संस्करण : २०१८
ISBN 978-93-87580-82-4

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : 08527 460252, 9990236819
E-Mail : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस
ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद,
उत्तर प्रदेश, पिन-201102

मूल्य : 595.00 रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक :

तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

समर्पण

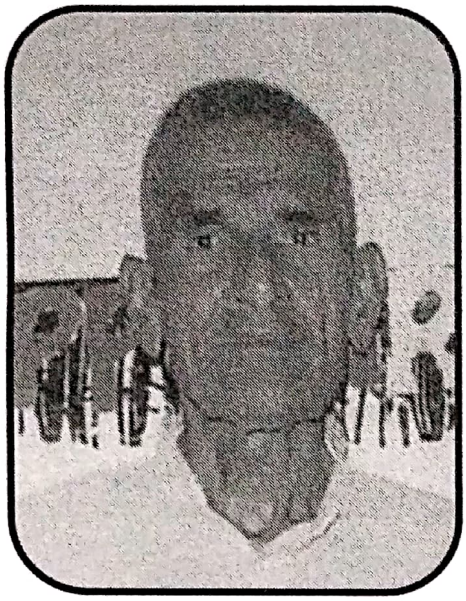

स्व.श्री रन्धीर सिंह परमार (कक्का जू)

के

श्री चरणों में समर्पित में जिन्होंने अपने
श्रम–सीकरों से हमें शिक्षित कर इस लायक
बनाया कि हम कुछ कर सकें।

अनुक्रम

प्राक्कथन	vii
1 सृजन की सार्थकता	०१
2 प्रेमचन्द के साहित्य में ग्राम्य जीवन	०८
3 प्रेमचन्द के कथा साहित्य में सद्भाव एवं राष्ट्रीय चेतना	१४
4 समकालीन हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य	२८
5 समकालीन हिन्दी कविता में आम आदमी का संघर्ष	३६
6 मॉरीशस में हिन्दी कविता	४७
7 भूषण एक राष्ट्रीय कवि	५७
8 संत परम्परा और अक्षर अनन्य	६४
9 मध्यकालीन सामाजिक चेतना और संत रविदास	७३
10 आज का संघर्ष और निराला साहित्य	८१
11 बिल्लेसुर बकरिहा : भारत के अर्थशास्त्र का यथार्थ	८६
12 हिन्दी में दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र	९६
13 प्रगतिशील मूल्यों का दस्तावेज - गोदान	१०४
14 संत परम्परा के कवि महामति प्राणनाथ	१११
15 समकालीन परिदृश्य में महाराज छत्रसाल की प्रासंगिकता	१२१
16 भक्तिकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि	१२६
17 राम राजा की नगरी के बहुज्ञ कवि केशव	१३२
18 रामकथा और सांस्कृतिक मूल्य	१४१

नामः डॉ. बहादुर सिंह परमार

पिता का नामः श्री रन्धीर सिंह परमार

पदः प्राध्यापक (हिन्दी)

जन्म तिथिः 04 जुलाई 1962

शैक्षिक योग्यताः एम.ए. (हिन्दी व अर्थशास्त्र)., पी–एच.डी. – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय , रीवा

विशेषज्ञताः बुन्देली लोक साहित्य, संस्कृति एवम हिन्दी कथा साहित्य

प्रकाशन : 1. अमरकान्त का कथा साहित्य (शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007)

2.बुंदेलखंड में छंदबद्ध काव्य परम्परा (म.प्र.आदिवासी लोककला अकादमी, भोपाल, ...)

3.1857 के पहले बुंदेलखंड मे अंग्रेजों से संघर्ष (राजकीय संग्रहालय झाँसी, 2007)

4.आचार्य नंद दुलारे बाजपेयीः सृजन के विविध आयाम (महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर)

5.बुन्देली व्यंजन (बुन्देली विकास संस्थान, बसारी, 2004)

6.बुंदेलखंड की साहित्यिक धरोहर (बुन्देली विकास संस्थान, बसारी, 2002)

7.छतरपुर जिले की बुन्देली लोक कथायें (महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर 2006)

8.लोकसाहित्य में मानव मूल्य (महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर 2011)

9. बुन्देली लोक साहित्य (ऐ.के. पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2016)

सम्मान : 1– म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २००८ में वागीश्वरी सम्मान (आलोचना हेतु)।

2–म.प्र. साहित्य अकादमी द्वारा २०१६ में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार।

3– अनेक आँचलिक संस्थाओं द्वारा सम्मान।

सम्पादन : बुन्देली बसंत पत्रिका एवं बुंदेलखंड का इतिहास (12 भाग) के अतिरिक्त कई पुस्तको का संपादन ।

एसोसिएटः आई.यू.सी, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला (हि.प्र.)

सम्प्रतिः प्राध्यापक , हिन्दी विभाग, शासकीय महाराजा महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

₹ 595/-

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी–508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली–110053
मो. 08527460252, 011–22911223
ईमेलः jtspublications@gmail.com

ISBN 978-93-87580-82-4